पर्यावरण जागरूकता के लिए रंगमंच का उपयोग

राजकुमार रजक

रंगमंच एक समावेशी वातावरण बनाकर कक्षा में 'करके सीखने' (learning-by-doing) की प्रक्रिया को सुगम बनाने का एक शक्तिशाली माध्यम है। जब एक बच्चा अपने दम पर कुछ हासिल करता है, तो वह सामाजिक जीवन के मुद्दों से जुड़ने के प्रयास में ख़ुद को अपने अनोखे ढंग से व्यक्त कर पाता है। घटनाओं को अपने निजी सन्दर्भ के ज़रिए देख पाना, फिर इसे अपनी कल्पना से जोड़ पाना और फिर वास्तविक दुनिया के साथ इस सम्बन्ध की खोजबीन करना ही नाटक की परिभाषा है। इसका एहसास हमें पर्यावरण अध्ययन के विषय 'पॉण्ड इन द क्लासरूम' पर काम करते वक्त हुआ। गाँव के तालाब के रख-रखाव में सामाजिक और प्रशासनिक संस्थाओं और निवासियों की भूमिका और ज़िम्मेदारियों की जाँच बच्चों के द्वारा 'रोल-प्ले' के माध्यम से की जाती है।

यह कक्षा-4 की योजना का एक नमूना है जिसमें स्थानीय जल स्रोत के रूप में तालाब पर किए गए काम को साझा किया जा रहा है। इस काम में निम्नलिखित बिन्दुओं की जाँच की जाती है :

1. जल की उपलब्धता और उसके वितरण को एक मूलभूत आवश्यकता के रूप में स्वीकार करना।
2. अपने पड़ोस में तालाब (जल निकाय) की आवश्यकता और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ के बारे में जागरूकता।

नींव के रूप में पूर्व अनुभव

बीते समय में कई बार, इन बच्चों को नाट्य खेलों से अवगत कराया गया था और बच्चे अपनी कल्पना से स्थानीय प्रस्तुतियाँ करके छोटी-छोटी घटनाओं पर आधारित नाटकीय कार्यक्रमों की रचना करना जानते हैं। वे छोटी कहानियों को अलग-अलग परिदृश्यों में तोड़ सकते हैं और उन्हें स्थिर मुद्राओं (frozen pictures) के रूप में प्रदर्शित कर सकते हैं। उन्होंने छोटे-बड़े, दोनों समूहों में काम किया है, यह ऐसा कौशल है जो तालाबों के विषय में काम करते समय मददगार था।

कार्य योजना

कार्य योजना के चरण एवं कई सत्रों से प्राप्त अनुभव यहाँ दिए गए हैं :

सत्र-*1*

क्या : किसी एक सन्दर्भ में पानी के स्रोत की समीक्षा।

क्यों : स्थानीय जल आपूर्ति के साथ-साथ वितरण और उपलब्धता की प्रक्रियाओं के बारे में बच्चों को शिक्षित करना। उन्हें दोनों पहलुओं पर काम करने के लिए प्रेरित करना और इस प्रक्रिया में, स्थानीय सामाजिक सन्दर्भ की कठिनाइयों और सम्बन्धित समस्याओं की खोज करना।

कैसे :

1. एक सामूहिक बातचीत की शुरुआत करें। हो सके तो 'सर्कल टाइम' के दौरान, यह बात करें कि हम पानी का उपयोग कब करते हैं, हमारे घर में पानी कौन लाता है और पानी कहाँ से आता है। एक काग़ज़ पर इसका एक सरल नक़्शा और चित्र बनाएँ।
2. इन मसलों के बारे में बच्चों के साथ एक और समूह चर्चा करें। इस बार इन बातों पर ध्यान देते हुए कि हमारे घरों में पानी कहाँ से आता है और परिवार का कोई व्यक्ति विशेष ही इसे लाने के लिए बाहर क्यों जाता है?
3. कक्षा में प्रदर्शित, बच्चों द्वारा बनाए गए मानचित्रों और चित्रों के बारे में बातचीत करें।
4. गाँव में पानी के स्रोतों की सूची बनाएँ।
5. इस सूची में 'तालाब' को हाइलाइट करें और बच्चों को इसके बारे में और जानने के लिए अपने परिवार वालों से और इलाक़े के निवासियों के साथ बात करने के लिए कहें।

परिणाम

1. बच्चों से बात करके और सूची को ब्लैकबोर्ड पर लगाकर शंकाओं का समाधान हुआ।
2. कुछ सवाल ये थे — पानी का स्रोत क्या है? इस सवाल के जवाब से पता चला कि कैसे कुछ घरों में बोरवेल होने के कारण बाहर से पानी नहीं लाना पड़ता, जबकि कई अन्य परिवार पानी के आपूर्ति टैंकों से पानी इकट्ठा करते हैं। कई बच्चों ने बताया कि उन्हें किसी दूर के स्रोत से पानी मिलता है, हालाँकि यह काम आमतौर पर उनकी माँ

और बहनें करती हैं। इस बात ने एक और चर्चा को जन्म दिया। पानी ढोना माताओं-बहनों की ज़िम्मेदारी क्यों है? इसका उत्तर था कि पिता काम पर गए होते हैं या चूँकि माँ खाना बनाती हैं, इसलिए वे ज़्यादातर समय पानी लाती हैं। इस तरह की प्रतिक्रियाओं ने हमें घर के बारे में बच्चों की धारणाओं के बारे में जानकारी दी, जिस पर हम बाद में और विस्तार से काम कर सकते हैं।

सत्र-*2*

क्या : गाँव और उसके पानी के स्रोत (तालाब) के बीच सम्बन्ध के बारे में जागरूकता।

क्यों : स्थानीय तालाब के साथ निवासियों के सम्बन्ध, उनकी चिन्ताओं और सुझाए गए समाधानों सहित।

कैसे : बच्चों को तालाब के बारे में बात करते हुए सुनना और उससे सम्बन्धित समस्याओं और चिन्ताओं की पहचान करना।

रंगमंच के माध्यम से समाधान खोजना

शिक्षक ने तालाब के बारे में यह कहानी सुनाई : अरनिया गाँव में एक पुराना तालाब है जो आस-पास के इलाक़े के कचरे से दूषित हो रहा है और तालाब सिकुड़ रहा है। इसकी वजह से मवेशियों को पीने के लिए पर्याप्त पानी नहीं मिल रहा है और खेत सूख रहे हैं। तालाब की हालत देखकर सोफ़िया नाम की एक महिला ने सरपंच से कई बार शिकायत की। उसका कहना था कि तालाब की सफ़ाई कराई जाए और साफ़-सफ़ाई बनाए रखने का उपाय भी निकाला जाए ताकि उसकी बकरियाँ और गाँव के अन्य मवेशी भी तालाब का पानी पी सकें। इसके बावजूद समस्या सुलझी नहीं है। सामुदायिक हॉल में सरपंच के साथ एक बैठक निर्धारित की गई है और उसमें सोफ़िया के भाग लेने की उम्मीद है। एक ग्रामीण के रूप में आप क्या कहना चाहेंगे, क्योंकि इस बैठक में निर्णय लिया जाना है? सभी बच्चों को ग्रामीणों की भूमिका दी गई और शिक्षक ने सुझाव दिया कि वे छोटे समूह बनाएँ और लिखें कि वे सरपंच को क्या कहेंगे।

सिर्फ़ कुछ बच्चे ही बोले; क्योंकि वे एक ही इलाक़े से हैं, तो कुछ बातों में दोहराव था। ये थे उनके मुख्य बिन्दु :

1. पहले गाँव के कुछ लोग तालाब में नहाते थे। जब गाँव में किसी की मृत्यु हो जाती तो सब तालाब के पास के पेड़ के नीचे रुक जाते और कई लोग वहाँ नहाते। जब से नलों से पानी की आपूर्ति शुरू हुई है, यह प्रथा कम हो गई है। हालाँकि, एक जल स्रोत के रूप में जानवर अभी भी इसका उपयोग करते हैं।
2. आस-पास के गाँवों का कचरा तालाब में डाला जा रहा था।
3. कभी-कभी छोटे-छोटे जानवर तालाब में डूब जाते थे।

जब बैठक चल रही थी, बच्चों के बीच कुछ काना-फूसी चल रही थी। फिर, दो बच्चों ने सरपंच को सुझाव दिया कि जानवर और परिवार के सदस्य बीमार पड़ रहे हैं, इसलिए कचरा तालाब से कहीं दूर फेंका जाए और सभी ग्रामीणों को इसकी सूचना दी जाए।

सत्र-*3*

क्या : स्थानीय तालाब और ग्रामीणों के बीच व्यापक सम्बन्धों पर ध्यान केन्द्रित करके समस्या का समाधान।

क्यों : गाँव की प्रशासनिक और व्यवस्था-सम्बन्धी प्रक्रियाओं से परिचित होना और पहचानी गई समस्या के मानवीय समाधान के लिए सुझाव एकत्र करना।

कैसे :

1. कक्षा से यह पूछकर कि क्या कुछ और है जो वे सरपंच को बताना चाहते हैं।
2. समूहों को यह बताकर कि वे अब सामुदायिक हॉल में जाएँगे जहाँ उनमें से एक सोफ़िया की भूमिका निभाएगा। बच्चों से कहा गया कि वे अपना मामला स्पष्ट रूप से बताएँ ताकि तालाब को साफ़ किया जा सके और पानी को सुरक्षित बनाया जा सके।

रंगमंच के माध्यम से समाधान खोजना

जैसे ही बच्चे आराम से बैठ गए, शिक्षक ने साफ़ा (पगड़ी) बाँधकर सरपंच की भूमिका ले ली। एक कुर्सी पर बैठे हुए शिक्षक ने कहा, "सामुदायिक हॉल में आप सभी का स्वागत है। आज की बैठक में हमें अपने गाँव के तालाब के बारे में बात करनी है। अब आप मुझे अपनी चिन्ताएँ बता सकते हैं।"

बच्चों ने अपनी समस्याओं के बारे में बात की और सरपंच ने उन्हें सुना, यह सुनिश्चित करते हुए कि समूह में सभी को बोलने का अवसर मिले। बच्चों द्वारा कही गई कुछ प्रमुख बातें इस प्रकार थीं :

1. कचरा पात्र को दूसरी जगह उपलब्ध कराएँ, ताकि हम वहाँ कचरा फेंक सकें।
2. तालाब को साफ़ करना ही चाहिए, नहीं तो हमारे जानवर मर जाएँगे।
3. तालाब के पानी को साफ़ करने का एक और कारण है — हमारे जानवर उस पानी को पीते हैं और हम उनका दूध पीते हैं।

सरपंच अन्त में तालाब की सफ़ाई कराने के लिए राजी हो गए और बोले, "मैं तालाब की सफ़ाई की व्यवस्था करूँगा और अब मुझे जाना होगा क्योंकि मुझे कुछ दूसरा काम है।" सरपंच कुर्सी से उठे और बाहर चले गए और शिक्षक के रूप में लौटकर आ गए।

इस प्रकार, रोल-प्ले के माध्यम से कक्षा में बच्चों और शिक्षक के बीच सम्बन्ध गहरा हुआ। बच्चे खुलकर अपनी बात कर पाए : कुछ बच्चों ने बताया कि अगर तालाब की सफ़ाई नहीं की गई, तो खेत की सिंचाई के लिए बनी नहरें बाधित हो जाएँगी और उनके पास दूर के स्रोतों से पानी लाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं हैं। एक बच्चे ने कहा कि अपशिष्ट को तालाब में डालने से वह पूरी तरह से अनुपयोगी हो जाएगा और भूजल की गुणवत्ता भी ख़राब हो जाएगी। उन्होंने पूछा : फिर हम क्या करेंगे? जानवर पानी पीने कहाँ जाएँगे?

नाट्य प्रक्रिया में बच्चे पहले की तरह ही भाग ले रहे थे, कुछ बच्चे दूसरों की तुलना में अधिक सक्रिय थे। लेकिन बातचीत में सोफ़िया के किरदार को शामिल नहीं किया गया, जो शायद सरपंच के साथ अधिक प्रभावी चर्चा का कारण बन सकता था।

फालोअप

शिक्षक ने गाँव में एक सरपंच के कार्यों की एक सूची ब्लैकबोर्ड पर लिख दी। सर्किल टाइम में गाँव के लोगों के सहयोग से तालाब की सफ़ाई कराने के तरीक़ों पर चर्चा हुई। शिक्षक ने बच्चों को अपने विचार और निष्कर्ष लिखने में मदद करके इस प्रक्रिया में सहायता की।

प्रभावशीलता पर विचार

इन चर्चा सत्रों के परिणामों में से एक यह था कि बच्चे यह देख पाए कि गाँव में सरपंच की क्या भूमिका होती है। हालाँकि कुछ बच्चों को तो यह भी नहीं पता था कि सरपंच कौन होता है, दूसरे बच्चों को समझ में आया कि सरपंच के कई अन्य कर्तव्य होते हैं, जैसे कि गाँव के निवासियों के लिए आधार कार्ड प्राप्त करना।

बच्चों के साथ अगली चर्चा यह पता लगाने के लिए थी कि उनकी सूचियों के साथ क्या किया जाना चाहिए। कुछ ने कहा कि वे इसे सरपंच को देंगे; कुछ अपनी सूची अपने पास रखना चाहते थे। कुछ अन्य बच्चों ने अपने घरों से कचरा इकट्ठा करने और उसे सही जगह पर फेंकने की पेशकश की।

इस गतिविधि के बाद गाँव में पानी की व्यवस्था और उसके वितरण पर चर्चा की जा सकती है। विशेष रूप से चौथी कक्षा में, सम्बन्धित विषयों पर काम किया जा सकता है जैसे पानी ले जाना और लैंगिक संवेदनशीलता और घर में पानी का अमूल्य महत्त्व।

निष्कर्ष

हमारे नियमित स्कूल दौरों के दौरान, आमतौर पर यह देखा जाता है कि बच्चे स्कूल के माहौल और कक्षा की शिक्षण प्रक्रियाओं में ख़ुद को अभिव्यक्त करने में संकोच करते हैं। और इसलिए, राय व्यक्त करने और समाधान खोजने जैसे पक्ष उपेक्षित रह जाते हैं और यह स्थिति धीरे-धीरे बच्चे के मूल स्वभाव या चरित्र में बैठने लगती है। एक बच्चे को विभिन्न तरीक़ों से बार-बार पर्यावरण के साथ अपने अन्तरंग सम्बन्ध की पड़ताल करनी चाहिए। तभी एक बच्चा, एक नागरिक के रूप में, पर्यावरण के साथ अपने सम्बन्ध को महसूस करेगा और उसकी रक्षा करने में सक्षम होगा।

राजकुमार रजक अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, टोंक में थिएटर इन एजुकेशन के लिए रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्यरत हैं। वे एक रंगकर्मी हैं — नाटककार और नाट्यशास्त्री। वे कई राज्यों में विविध समूहों के साथ रंगमंच के माध्यम से सामाजिक विकास और संघर्ष प्रबन्धन के लिए काम करते हैं। इन विविध समूहों में बेघर बच्चे और युवा, बाल श्रमिक, बार डांसर, यौनकर्मी शामिल रहे हैं। साथ ही वे अनौपचारिक सामुदायिक शिक्षा केन्द्रों में भी इसी तरह का कार्य करते हैं। वे इण्डिया फ़ाउण्डेशन फ़ॉर द आर्ट्स, बेंगलूरु और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के थिएटर प्रोडक्शन ग्रांटी (अनुदेयी) और इनलैक्स फ़ाउण्डेशन, मुम्बई के थिएटर अवार्डी रहे हैं। वे हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी में गेस्ट फैकल्टी (थिएटर इन एजुकेशन) भी रह चुके हैं। उनसे rajkumar.rajak@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अनमोल जैन **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर** : अनुज उपाध्याय